प्रश्न-पत्र ब्लूप्रिन्ट
BLUE PRINT OF QUESTION PAPER

कक्षा :– XI   परीक्षा : हायर सेकण्डरी   पूर्णांक :– 100

विषय :– व्यवसायिक अर्थशास्त्र   समय : 3 घण्टे

स. क्र.	इकाई	इकाई पर आवंटित अंक	वस्तुनिष्ठ प्रश्न 1 अंक	अंकवार प्रश्नों की संख्या			कुल प्रश्न
				4 अंक	5 अंक	6 अंक	
1.	अर्थशास्त्र की अवधारणाएँ	08	–	2	–	–	2
2.	उपयोगिता व संबंधित नियम	08	2	–	–	1	1
3.	उपभोक्ता व्यवहार व माँग	10	4	–	–	1	1
4.	उत्पादन	08	3	–	1	–	1
5.	उत्पादन व्यवहार पूर्ति	10	4	–	–	1	1
6.	मूल्य निर्धारण	08	2	–	–	1	1
7.	अर्थव्यवस्था सामान्य परिचय	08	2	–	–	1	1
8.	आर्थिक संवृद्धि एवं विकास	08	3	–	1	–	1
9.	भारतीय अर्थव्यवस्था (1947 के समय)	08	3	–	1	–	1
10.	भारतीय अर्थव्यवस्था (1947 से 1991)	08	–	2	–	–	2
11.	भारतीय अर्थव्यवस्था (1991 के पश्चात्)	08	2	–	–	1	1
12.	जनसंख्या व अन्य समस्याएं	08	–	2	–	–	2
	योग =	**100**	**(25) = 5**	**06**	**03**	**06**	**15+5=20**

निर्देश :–

1. प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न होगें जिसके अन्तर्गत रिक्त स्थानों की पूर्ति, सत्य/असत्य, एक शब्द में उत्तर, जोड़ी बनाना तथा सही विकल्प का चयन आदि के प्रश्न होगें। प्रत्येक प्रश्न में 5 अंक निर्धारित है।
2. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को छोड़कर सभी प्रश्नों में विकल्प का प्रावधान रखा जाये। यह विकल्प समान इकाई से तथा यथा संभव समान कठिनाई स्तर वाले होने चाहिए।
3. कठिनाई स्तर – 40% सरल प्रश्न, 45% सामान्य प्रश्न, 15% कठिन प्रश्न

प्रार्दश प्रश्न पत्र

कक्षा–11

विषय – व्यवसायिक अर्थशास्त्र

समयः 3 घण्टा **पूर्णांक : 100**

निर्देश :–

1. सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।
2. प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न है प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है।
3. प्रश्न क्रमांक 6 से 20 तक में आन्तरिक विकल्प हैं।
4. प्रश्न क्रमांक 6 से 11 तक प्रत्येक प्रश्न 4 अंक प्रश्न क्रमांक 12 से 14 तक प्रत्येक प्रश्न 5 अंक तथा प्रश्न क्रमांक 15 से 20 तक में 6 अंक आवंटित है।

प्रश्न 1 सही विकल्प लिखिए –

(अ) उपभोग की मात्रा में होने वाली प्रत्येक वृद्धि के साथ सीमान्त उपयोगिता घटती जाती है। यह कौन सा नियम है? (1)

(क) कुल उपयोगिता (ख) उपयोगिता ह्रास नियम (ग) सीमान्त उपयोग

(ब) उपयोग का सृजन करना क्या कहलाता है : (1)

(क) पूंजी (ख) श्रम (ग) उत्पादन

(स) प्रत्येक प्रकार का धन जिससे आय प्राप्त होती है? क्या कहलाता है (1)

(क) उत्पादन (ख) पूंजी (ग) लाभ

(द) एक निश्चित मात्रा उत्पादित करने के लिए जो कुल व्यय लगता है उसे कहते है – (1)

(क) स्थित लागत (ख) पूरक लागत (ग) कुल लागत

(ई) पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषता है : (1)

(क) बाजार का अपूर्ण ज्ञान (ख) विभिन्न वस्तु (ग) बाजार का पूर्ण ज्ञान

प्रश्न 2 सत्य या असत्य में उत्तर दीजिए – (5)

(अ) पूर्ण प्रतियोगिता का कल्पना मात्र है।

(ब) मांग का नियम वस्तु की कीमत तथा मांग में विपरीत संबंध बताता है।

(स) देश की जनसंख्या में वृद्धि होती है तो वस्तुओं की मांग में कमी हो जायगी।

(द) वस्तु की कीमत बढ़ने पर मांग बढ़ती है।

(द) समाज में धन का वितरण भी वस्तुओं की मांग को प्रभावित करता है।

प्रश्न 3 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए (5)

(अ) अर्थ व्यवस्था को मुख्य .... श्रेणियों में विभक्त किया गया है।

(ब) स्थित लागत वक्र .... होता है।

(स) स्थिर लागत तथा परिवर्तन शील लागत का योग .... लागत होता है।

(द) कुल लागत में उत्पादन की मात्रा से भाग देने पर .... लागत प्राप्त हो जाती है।

(ई) वस्तु में उपयोगिता तथा मूल्यों का सृजन करना ही .... कहलाता है।

प्रश्न 4 जोडी बनाओं– (5)

(अ)	आर्थिक विकास से आश्य उस प्रक्रिया से है।	(1)	स्वास्थ्य, शिक्षा तथा जीवन स्तर की उपलब्धियों को मापता है।
(ब)	आर्थिक संवृद्धि का आशय	(2)	उदारीकरण है।
(स)	मानव विकास सूचकांक	(3)	नियमनों व नियंत्रणों में ढील
(द)	नई आर्थिक नीति की विशेषता	(4)	अर्थ व्यवस्था की उत्पादन क्षमता में वृद्धि करने से है।
(इ)	उदारीकरण से आशय है	(5)	जिससे राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती हैं

प्रश्न 5. एक वाक्य में उत्तर दीजिए – (5)

(अ) भारत को स्वतंत्रता कब मिली।

(ब) स्वतंत्रता प्राप्ति के समय मुख्य व्यवसाय।

(स) स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारतीय अर्थ व्यवस्था की दशा कैसी थी।

(द) एक अतिरिक्त इकाई के उपभोग से प्राप्त होने वाली उपयोगिता कौन सी है।

(ई) उत्पादन के साधनों पर समाज का स्वामित्व कौन सी अर्थ व्यवस्था में होती है।

प्रश्न 6. एडम स्मिथ को अर्थशास्त्र का जनक क्यों कहां जाता है? परिभाषा भी लिखिए? (4)

अथवा

आवश्यकता का आशय बतलाते हुए वर्गीकरण भी समझाइए।

प्रश्न 7. प्राचीन पश्चात्य आर्थिक विचारधारा की मुख्य विशेषताएँ बताइये। (4)

अथवा

अर्थशास्त्र के प्रमुख विभाग लिखिये।

प्रश्न 8. 1991 तक भारतीय अर्थव्यवस्थ की व्यूह रचना को समझाइये? (4)

अथवा

आर्थिक नियोजन के प्रमुख उद्देश्यों को समझाइये।

प्रश्न 9. 1991 तक नियोजन के अन्तर्गत अपनाई गई आर्थिक नीतियाँ बताइये।

अथवा

1991 में भारत की योजनाओं की उपलब्धियाँ लिखिए।

प्रश्न 10. माल्यस के जनसंख्या सिद्धांत की मान्यताऐं बनाइये। (4)

अथवा

माल्यस के सिद्धान्त की आलोचना बताइये।

प्रश्न 11. अल्पकालीन, मध्यकालीन, दीर्घकालीन कृषि साख क्या है। (4)

अथवा

निर्धनता को कम करने हेतु चार सरकारी उपाय बतलाईये?

प्रश्न 12. श्रम विभाजन के लाभ बतलाईये। (5)

अथवा

उत्पादन का महत्व बताइये।

प्रश्न 13. आर्थिक विकास से आशय एवं चार विशेषता भी बताईये। (5)

अथवा

आर्थिक विकास एवं आर्थिक संवृद्धि में अंतर लिखिए।

प्रश्न 14. स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारतीय अर्थव्यवस्था के पिछड़ेपन के 6 कारण बतलाईयें। (5)

अथवा

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय सामाजिक आधार भूत संरचनाओं का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 15. उपयोगिता हास नियम के 6 अपवाद बनाईये? (6)

अथवा

सम सीमान्त उपयोगिता नियम के 6 महत्व बताईये?

प्रश्न 16. मांग को निर्धारित करने वाले 6 तत्व समझाईये? (6)

अथवा

मांग की लोच को समझाते हुए पूर्णतया लोच दार मांग को स्पष्ट कीजिये।

प्रश्न 17. परिवर्तन शील लागत को उदाहरण सहित वर्णन कीजिए। (6)

अथवा

स्थिर लागत एवं परिवर्तन शील लागत में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 18. पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएँ बताइये। (5)

अथवा

सन्तुलन मूल्य का निर्धारण उदाहरण सहित समझाइये।

प्रश्न 19. अवसर लागत से क्या आशय है? उत्पादन सम्भावना वक्र (6)

तकनीक से समझाईये?

अथवा

अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्या क्या है? (कोई 6 समस्या बताईये)

प्रश्न 20. आर्थिक सुधार या नई आर्थिक नीति की आवश्यकता को समझाइये। (6)

अथवा

भारत में उदारीकरण के लिए क्या उपाय किये गये समझाइये।

आदर्श उत्तर

कक्षा– 11वीं

विषय : व्यवसायिक अर्थशास्त्र

पूर्णांक – 100 अंक

उत्तर 1	(अ)	उपयोगिता ह्रास नियम	(1)
	(ब)	उत्पादन	(1)
	(स)	पूंजी	(1)
	(द)	कुल लागत	(1)
	(ई)	बाजार का पूर्ण ज्ञान	(1)
उत्तर 2	(अ)	सत्य	(1)
	(ब)	सत्य	(1)
	(स)	असत्य	(1)
	(द)	असत्य	(1)
	(ई)	सत्य	(1)
उत्तर 3	(अ)	तीन	(1)
	(ब)	समानान्तर	(1)
	(स)	कुल	(1)
	(द)	औसत	(1)
	(ई)	उत्पादन	(1)
उत्तर 4	(अ)	5	(1)
	(ब)	4	(1)
	(स)	1	(1)
	(द)	2	(1)
	(ई)	3	(1)

उत्तर 5 (अ) 15 अगस्त 1947 (1)

(ब) कृषि (1)

(स) अल्प विकसित या पिछड़ेपन (1)

(द) सीमान्त उपयोगिता (1)

(ई) समाजवाद (1)

उत्तर 6 अर्थशास्त्र को सर्वप्रथम एक प्रथक विज्ञान के रूप में विकसित (4)
किया इसलिए एडम स्मिथ को अर्थशास्त्र का जनक कहा गया।
एडम स्मिथ के अनुसार – अर्थशास्त्र धन का विज्ञान है।

अथवा

आवश्यकता का अभिप्राय उस प्रभाव पूर्ण इच्छा से होता है जिसे पूरा करने के लिए मनुष्य के पास साधन हाते है तथा वह उनका त्याग करने को तैयार होता है। आवश्यकता का वर्गीकरण :

(1) अनिवाय (2) आराम सम्बन्धी (3) विलासिताऐं

उत्तर 7. प्राचीन पाश्चात्य आर्थिक विचारधारा की मुख्य विशेषताएँ :– (4)

1. अर्थशास्त्र का विकास केवल राजनीतिक विचारो के आधीन।
2. आर्थिक समस्याओं को विशेष महत्त्व नहीं।
3. श्रम के महत्त्व को सही नहीं आँका।
4. अच्छी और नैतिक क्रियाएँ जीवन का सार।
5. महत्त्वपूर्ण आर्थिक क्रियाओं की उपेक्षा।

अथवा

अर्थशास्त्र के प्रमुख पांच विभाग है।

1. उपभोग
2. उत्पादन
3. विनिमय
4. वितरण
5. राजस्व

उत्तर 8 भारतीय अर्थव्यवस्था की 1991 तक व्यूह रचना। (4)

विकास की व्यूह रचना से आशय इन निर्णयों, क्रियाओं एवं विधियों के योग से है जिनके सहारे नियोजन के निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास किया जाता :–

1. विकास के लिए सुदढ़ आधार तैयार करना।
2. दीर्घ कालीन विकास हेतु औद्योगीकरण
3. पूंजीगत उपकरणों तथा दूसरे आधार भूत उद्योगों का विकास
4. लघु उद्योगों एवं कृषि उत्पादन में वृद्धि पर बल।
5. आर्थिक संवृदिध के साथ बुनियादी समस्याओं का हल।
6. आर्थिक विकास की नई व्यूह रचना
7. सामाजिक न्याय, ऊर्जा व भुगतान संतुलन पर विशेष ध्यान।

अथवा

<u>**आर्थिक नियोजन :**</u>

आर्थिक नियोजन का आशय एक ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें एक निर्धारित अवधि में सुनिश्चित एवं स्पष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आर्थिक शक्तियों का विवेकपूर्ण ढंग से समन्वय एवं नियंत्रण किया जाता है।

<u>**उद्देश्यः–**</u>

1.	आर्थिक संवृदिध	4.	सामाजिक न्याय
2.	आत्म निर्भरता	5.	गरीबी निवारण
3.	पूर्ण रोजगार	6.	आधुनिकीकरण

उत्तर 9. 1991 तक नियोजन के अन्तर्गत अपनायी गई आर्थिक नीतियाँ (4)

1. सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार
2. निजी क्षेत्र का विस्तार
3. मूल उद्योगों का विकास
4. विदेशी पूँजी पर प्रतिबन्ध

अथवा

1991 में भारत की योजनाओं की उपलब्धियाँ :–

1. राष्ट्रीय आय में वृद्धि
2. बचत एवं विनियोग दर में वृद्धि
3. कृषि उत्पादन में वृद्धि
4. औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि
5. विद्युत, परिवहन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं बैंकिंग क्षेत्र के प्रगति

उत्तर 10 माल्थस के विचार में गरीबी तथा खराब आर्थिक स्थिति का कारण (4)
जनसंख्या का जीवन निर्वाहन के साधनों की तुलना में तेजी से बढ़ता है।

1. मनुष्य की काम वासना स्थिर रहती है।
2. जीवन स्तर बढ़ने से जनसंख्या में वृद्धि होती।
3. जीवन स्तर तथा जनसंख्या में सीधा संबंध होता है।
4. कृषि में उत्पति हास नियम लागू होता है।

अथवा

<u>आलोचना:</u>
1. मनुष्य की प्रजवन शक्ति स्थित नहीं रहती।
2. सिद्धान्त का गणितीय रूप उचित नहीं।
3. जनसंख्या की प्रत्येक वृद्धि हानि कारक नहीं।
4. जनसंख्या का संबध केवल खाद्यान्नों से स्थापित करना उचित नहीं।

उत्तर 11 कृषि साख का आशय ग्रामीण क्षेत्र में किसानों को ऋण सुविधाएँ उपलब्ध (4)
कराने से है। भारतीय किसान की वितीय आश्यकताओं को तीन प्रकार की साख द्वारा पूरा किया जाता है।

1. **<u>अल्पकालीन साख :</u>** किसानों को बीच, उर्वरक व पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु 15 माह से कम अवधि के ऋण उपलब्ध कराए जाते है।
2. **<u>मध्यकालीन साख :</u>** पशु खरीदने, कुंओ व कृषि उपकरणों की मरम्मत आदि के लिए 15 माह से 5 वर्ष के लिए भृण।

3. **दीर्घकालीन साख :** भूमि, भूमि को कृषि योग्य बनाने कुंए खुदवाने, कृषि यन्त्र आदि के लिए 5 वर्ष से अधिक के लिए ऋण उपलब्ध किया जाता है।

अथवा

निर्धनता को कम करने के लिए उपाय

1. एकीकृत ग्राम विकास कार्यक्रम
2. जवाहर रोजगार योजना
3. प्रधान मंत्री ग्रामोदय योजना
   (i) प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना
   (ii) प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना (ग्रामीण आवास)
   (iii) प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना (ग्रामीण पेयजल)
   (iv) अन्त्योदय अन्न योजना

उत्तर 12 श्रम विभाजन के लाभ – (5)

1. **उत्पादन में वृद्धिः** श्रमिक अपने कार्य में विशेषता प्राप्त कर लेते हैं। जिससे उत्पादन में वृद्धि होती है।
2. **यंत्रों का अधिक प्रयोगः** यंत्रों के प्रयोग से कार्य आसान हो जाता है। जिससे लाभ उत्पादन को होता है।
3. **समय की बचतः** श्रम विभाजन से एक श्रमिक को निर्धारित कार्य ही करना होना है।
4. **कार्य कुशलता के वृद्धिः** एक ही कार्य को बार बार करने से श्रमिक कार्य में कुशल हो जाता है।

अथवा

उत्पादन का महत्व :–

1. मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति
2. जीवन स्तर का निर्धारण
3. व्यापार तथा वाणिज्य की प्रगति
4. सार्वजनिक आय में वृद्धि।

उत्तर 13 **आर्थिक विकास**– यह एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक अर्थ व्यवस्था की वास्तविक राष्ट्रीय आय में दीर्घकाल तक वृद्धि होती है। (मेयर बाल्डविन) (5)

विशेषताऐं :

1. एक प्रक्रिया
2. राष्ट्रीय आय व प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि
3. जनसंख्या में वृद्धि
4. दीर्घ कालीन वृद्धि
5. जनसमान्य के जीवन स्तर में वृद्धि

अथवा

अन्तर	आर्थिक विकास	आर्थिक संवृदिध
विस्तृत अवधारणा	यह विस्तृत अवधारणा है	केवल उत्पादन व प्रति व्यक्ति आय में वृदिध।
सामाजिक न्याय	सामाजिक न्याय आवश्यक	सामाजिक न्याय आवश्यक नहीं।
समग्रता	अर्थव्यवस्था की संपूर्ण वृदिध	क्षेत्रात्मक वृदिध
लक्ष्य	पूर्व निर्धारित	विशिष्ट उद्देश्य व लक्ष्य पूर्व निर्धारित नहीं।
विकास की दशा	सकारात्मक	आर्थिक अपनति/ नकारात्मक कमी कभी।

उत्तर 14. स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय भारतीय अर्थ व्यवस्था के पिछले पन के मुख्य कारणः– (5)

1. मुक्त व्यापार नीति
2. नवीन भूमि व्यवस्था
3. कृषि का व्यवसायी करण
4. दस्तकारी व कुटीर उद्योगों का पतन
5. आर्थिक निष्कासन
6. देश का विभाजन

अथवा

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत में सामाजिक आधारभूत संरचना निम्नानुसार थीः–

शिक्षाः प्राचीन शिक्षा स्तर उच्च था। अंग्रेजों ने शिक्षा प्रणाली को नष्ट किया– जामिया मिलिया, काशी विद्यापीठ विश्व भारती, गुजरात विद्यापीठ की स्थापना हुई।

स्वास्थ्य – भारत में स्वास्थ्य दशाऐं निम्न स्तर की थीं। औसत आयु 32 वर्ष थी जो वर्तमान में 64 वर्ष है।

आवास – आवास का स्तर निम्न था निःशुल्क आवास की कोई व्यवस्था नहीं थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद केन्द्र व राज्य सरकारों ने श्रमिकों, शरणार्थियों व गरीबी रेखा के नीचे वाले व्यक्तियों हेतु आवास योजना बनाई जैसे इंदिरा आवास योजना।

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय आर्थिक व सामाजिक आधार भूत संरचनाऐं अविकसित थीं, भारतीय अर्थव्यवस्था गतिहीन थी।

उत्तर 15 उपयोगिता हास नियम के 6 अपवाद या आलेचनाएँ (6)

1. वस्तु की उपभोग इकाइयाँ बहुत छोटी होने पर यह नियम लागू नहीं होता है।
2. दुर्लभ तथ शान– शौकत की वस्तुओं पर यह नियम लागू नहीं होता है।
3. शराब के उपयोग के संबंध में यह नियम लागू नहीं होता है।
4. मुद्रा के संचय के संबंध में यह नियम लागू नहीं होता है।
5. मधुर कविता तथा गीता को बार–बार सुनने पर उसकी उपयोगिता बढ़ती जाती है।
6. टेलीफोन – टेलीफोन का कनेक्शन बढ़ने से अगले कनेक्शन की उपयोगिता बढ़ जाती है।

अथवा

सम सीमान्त उपयोगिता नियम के महत्व

1. उपभोग के क्षेत्र में प्रयोग
2. उत्पादन के क्षेत्र में प्रयोग
3. विनिमय के क्षेत्र में प्रयोग
4. वितरण के क्षेत्र में प्रयोग
5. राजस्व के क्षेत्र में प्रयोग
6. आर्थिक जांच के प्रत्येक क्षेत्र में

उत्तर 16 मांग को निर्धारित करने वाले तत्व (6)

1. वस्तु की कीमत : वस्तु की कीमत में परिवर्तन के साथ मांग भी परिवर्तित।
2. उपभोक्ता की आय।
3. धन का वितरण।
4. उपभोक्ताओं की रूचि।
5. जनसंख्या।
6. सरकारी नीति : यदि सरकार करों में वृद्धि करती है तो आय में कमी/ वस्तु की लागत व मूल्य वृद्धि से।

अथवा

मांग की लोच मार्शल के अनुसार ''किसी बाजार में मांग की लोच का कम था अधिक होना इस घात पर निर्भर है कि मूल्य में एक निश्चित कमी होने से मांग अधिक बढ़ती है या कम और मूल्य में एक निश्चित वृद्धि होने से मांग कम घटती है या अधिक।

पूर्णत या लोचहार मांग – जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन न होने पर या अत्यन्त सूक्ष्म परिवर्तन होने पर भी योग में अत्यधिक परिवर्तन हो जाता है।

उत्तर 17 **परिवर्तनशील लागतः** वे होती है जो कि एक फर्म को परिवर्तनशील साधनो (6)
को प्रयोग में लाने में के लिए करनी पड़ती है। या हम कहें कि एक
फर्म को परिवर्तनशील साधनों को प्रयोग मं लाने के लिए करनी पड़ती है। या
हम कहें कि यहा वह लागत है जो कि उत्पादन में परिवर्तन होने पर परिवर्तित होती है।

- अल्पकाल में उत्पादन बन्द हो जाने पर परिवर्तनशील लागने शून्य हो जातीं हें
- कुल उत्पादन में स्थिर लागतें घटाने पर परिवर्तनशील लागतें प्राप्त होती है।

अथवा

	स्थिर लागत	**परिवर्तनशील लागत**
1.	स्थित लागतों का संबंध अल्पकाल में उत्पादन के स्थिर साधनों से होता है।	परिवर्तनशील लागतों का संबंध अल्पकाल में परिवर्तनशील साधनों से होता है।
2.	उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन का स्थिर लागतों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।	उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन का प्रभाव पड़ता है।
3.	अल्पकाल में उत्पादन बंद हो जाने पर भी स्थिर लागतें वहन करना होती है।	उत्पादन अल्पकाल में बन्द होने पर लागतें शुन्य हो जाती है।
4.	कुल उत्पादन में से परिवर्तन शील लागते घटाने पर स्थित लागतें प्राप्त होती है।	कुल उत्पादन में से स्थिर लागतें घटाने पर परिवर्तन शील लागतें प्राप्त होती है।

उत्तर 18. पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताऐंः (6)

1. **<u>क्रेता व विक्रेता की अधिक संख्याः</u>** पूर्ण प्रतियोगिता में क्रेता व विक्रेता की अधिक संख्या बहुत अधिक होती।

2. **<u>समरूप वस्तुः</u>** पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में सभी विकेता समरूप या एक रूप की वस्तु को बेचते है।

3. **<u>बाजार का पूर्ण ज्ञानः</u>** पूर्ण प्रतियोगिता में क्रेता और विकेता को बाजार की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।

4. **<u>यातायात लागत न होनाः</u>** पूर्ण प्रतियोगिता में यातायात लागतों का अभाव होता है।

अथवा

सन्तुलन मूल्य का निर्धारण :–

उपभोक्ता वस्तु का मूल्य उसकी सीमान्त उपयोगिता से अधिक नहीं देगा तथा उत्पादक वस्तु का मूल्य उसकी सीमान्त लागत से कम नहीं लेगा। वस्तु का मूल्य इन दोनों सीमाओं के बीच में कहीं निर्धारित होगा। प्रत्येक क्रेता इस बात का प्रयास करता है कि उसे वस्तु का कम से कम मूल्य चुकाना पड़े। प्रत्येक विक्रेता इस बात प्रयास करता है। कि वह वस्तु का अधिक से अधिक मूल्य प्राप्त कर ले। अन्त में वस्तु का मूल्य उस बिन्दु पर निर्धारित होता है जहाँ पर वस्तु की माँग तथा वस्तु की पूर्ति मात्रा आपस मे बराबर हो जाती है जिसे सन्तुलन मूल्य कहते है।

उत्तर 19 **<u>अवसर लागत :</u>** ‘‘अर्थव्यवस्था की दृष्टि सें एक वस्तु की अतिरिक्त मात्रा की अवसर लागत दूसरी वस्तु की त्याग की गई मात्रा होतीं है। (6)

<u>उत्पादन संभावना वक्र</u>

1. उत्पादन सम्भावना वक्र बांये से दांये नीचे गिरता हुआ होता है।
2. उत्पादन सम्भावना वक्र मूल बिन्दु की ओर नतो दर (Concave) होता है। बढ़ती हुई सीमान्त अवसर लागत की स्थिति यही है।
3. साधनों के पूर्ण प्रयोग तथ अर्थव्यवस्था में पूर्ण उत्पादन को व्यक्त करता है।
4. एक अर्थ व्यवस्था उत्पादन सम्भावना वक्र पर उसी संयोजन का चुनाव करती है जैसा कि उस अर्थ व्यवस्था (पूंजीवादी, साम्मवादी, मिश्रित) का स्वरूप होता है।

5. यदि साधनों की मात्रा में वृद्धि होती है तो उत्पादन संभावना वक्र खिसक जाता है।

अथवा

अर्थ व्यवस्था की केन्द्रीय समस्या मुख्य रूप से हैं :–

1. किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाए

2. उत्पादन का ढंग क्या हो?

3. उत्पादन किन लोगों के लिए किया जाए?

4. पूर्ण रोजगार के स्तर की स्थापना कैसे हो?

5. संसाधनों के उपयोग और उत्पादन के वितरण में कुशलता कैसे प्राप्त हो?

6. आर्थिक विकास की प्रक्रिया कैसे नेज हो ।

उत्तर 20 आर्थिक सुधारों या नई आर्थिक नीति की आवश्यकता प्रमुख रूप से निम्न कारणों से अनुभव की गई।

1. **खाड़ी संकटः** 1990 का ईराक इरान युद्ध में तेल कीमत में वृद्धि, सोना गिरवीकरण समस्या

2. **राजकोषीय घाटे में वृद्धि :** सरकारी राजस्व प्राप्ति एवं अनुदान में मिली राशि से अधिक सरकारी व्यय हो रहा था। देशभ्रण जाल में फेस रहा था।

3. **कीमतों में वृद्धि :** मुद्रास्फीति की वार्षिक दर 16.7ः हो गई। खाद्य पदार्थो की कीमतों में तेजी हो रही थी।

4. **सार्वजनिक क्षेत्र की असफलताः** सरकार पर सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठान बोझ बन गए संसाधन नहीं जुटा सकें।

अथवा

भारत में उदारीकरण के लिए किये गये उपाय :–

1. रूपये का अवमूल्यन

2. रूपये की पूर्ण परिवर्तनीयता

3. औद्योगिक नीति प्रस्ताव

4. विदेशी विनिमय नियमन अधिनियम में संशोधन

5. विदेशी निवेश व विदेशी प्रौद्योगिक विनियमों में सुधार

6. आयात–निर्यात नीति।